सुशील सिद्धार्थ की व्यंग्य यात्रा

(2005 से पहले)

सुशील सिद्धार्थ की व्यंग्य यात्रा

(2005 से पहले)

सुशील सिद्धार्थ

सुशील सिद्धार्थ

2 जुलाई 1958 को ग्राम भीरा, जिला सीतापुर (उ.प्र.) में जन्म सुशील ने हिंदी साहित्य में पी-एच.डॉ. की।

व्यंग्य, आलोचना और कथा साहित्य में लंबे समय संलग्न। देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आलोचनाएं प्रकाशित।

दूरदर्शन से 30 वृत्तचित्र प्रसारित। कमलेश्वरजी के साथ पटकथा एवं संवाद लेखन के अतिरिक्त अनेक पत्रों में स्तंभ लेखन। संप्रति 'नया ज्ञानोदय' में 'पढ़ते-लिखते', 'कथाक्रम' में 'राग लन्तरानी' और 'लमही' में 'कथा प्रान्तर' का लेखन।

व्यंग्य संग्रह 'प्रीति न करियो कोय' और 'मो सम कौन' तथा अवधी कविता संग्रह 'बागन बागन कहे चिरैया' और 'एक' बहुचर्चित। 'श्रीलाल शुक्ल संचयिता' का डॉ. नामक सिंह के साथ सह-संपादन।

'नारद की चिंता' इनका नवीनतम व्यंग्य संग्रह है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से दो बार व्यंग्य और दो बार कविता हेतु नामित पुरस्कार।

अनुक्रम

प्रीति न करियो कोय	4
दो बैलों की कथा	7
स्माइल प्लीज	15
धनतेरस बनाम नर्कचौदस	18
अध्यक्षता : एक अध्ययन एक पटु पटकथा	19
मुखड़ा क्या देखे दरपन में	23
दिन ढल जाए हाये....	25
बस इतना-सा ख्वाब है	27
भूतपूर्व प्रेमिका से मुठभेड़	29
एक और आत्ममंथन	32
सुख का नया फंडा	35
किसिम-किसिम की दृष्टियां	37
सब मिलावट है	39
होली का दार्शनिक पक्ष	42
ना मानूं रे!	45
नए को नापो	48

प्रीति न करियो कोय

किसी दुखी आत्मा के उद्‌गार पर विचार करने से पहले यह तय कर लिया जाए कि प्रीति संज्ञा है या क्रिया। समय की कमी है, इसलिए यह समस्या विश्वविद्यालयों के हवाले करता हूं। मेरे अनुसार प्रीति वह अनुभव है, जो इंसान को संज्ञाशून्य कर देता है। प्रीति वह हादसा है, जिससे आदमी के क्रिया-कर्म की तिथि निकट आ जाती है। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार 'प्रीति किए दुख होय।' प्रीति का एक जुड़वा भाई है, जिसे प्रेम कहते हैं। भाई बहन से किसी मामले में कम नहीं। प्रेम में आदमी अंधा हो जाता है। 'प्रेम के अंधे को हर जगह प्रेमिका ही प्रेमिका दिखाई देती है। एक सुभाषित है, 'प्रेम जूता खाने का सर्वोत्तम उपाय है।' इसलिए प्रीति हो या प्रेम, बचकर रहना चाहिए। याद कर लेना कि 'प्रीति न करियो कोय।'

अगर बिना किए हाजमा खराब लगे तो पूरी प्लानिंग से करिए। विद्वान जानते हैं कि प्लानिंग का अर्थ फेमिली प्लानिंग से भी है। फेमिली न हो, तब तो प्लानिंग और भी जरूरी है, मगर उत्तेजित होने से मसले उलझ जाते हैं। शांत मन से सोचिए, प्रीति किए बिना भारत की गरीबी में कौन-सी कमी आ जाएगी। आने वाले दिनों में ऐसे भाव बने रहे तो हम दुनिया को क्या मुंह दिखाएंगे। दुनिया में उन्हीं देशों का मुंह देखा या तका जाता है, जो मानवाधिकारों के खून से मंजन करते हों। भारत के पिछड़ने का कारण है थोड़ा बहुत आपस में बचा प्रेम। आगे बढ़ना है तो विचार, विचारधारा और भावना से ऊपर उठना होगा। ऊपर उठने के बाद सब ठीक हो जाता है। हवाई जहाज से जमीन पर चलते आदमी भुनगे नजर आते हैं। इसके बाद जमीन पर चलिए, तब भी यही स्थिति रहती है। ऐसा कुछ महान लोगों का अनुभव है। कुर्सी की ऊंचाई बढ़ती जाती है और संवेदना का कद छोटा होता जाता है। प्रदेश का कल्याण होता रहा है। सियासत सरकार उठाने-गिराने की लोकतांत्रिक क्रीड़ा बन जाती है। इसलिए प्रीति या प्रेम से ऊपर उठो। नफरत और घृणा से डूबा सारा परिवेश तुम्हारा है प्रीति करि काहू सुख न लहयो। प्रेम आदमी को कमजोर करता है। आस्ट्रेलिया के एक मशहूर अंपायर हर समय घृणा में डूबे रहते हैं। भारत हो या पाकिस्तान, वसीम अकरम हो या सचिन, उनकी घृणा की आंधी पूरी टीम के पैर उखाड़ देती है। आस्ट्रेलिया यूं ही विश्वविजयी टीम नहीं है। थोड़ी बहुत बैकिंग अंपायर महाशय की भी है। भारत में है कोई ऐसा अंपायर, जिसकी

उंगली पर नफरत का नाखून लगा हो। करते रहिए खेल भावना से प्रीति, हारते रहिए मैच।

प्रीति ही करनी है तो जाति व्यवस्था से करो। चेतना की रोशनी लुप्त न हो, इसलिए एक गुप्तजी ने चेताया है कि जाति व्यवस्था हमारी एकता का अधार है। बहुत दिन बाद सामाजिक चिंतन में गति आई है। हो सकता हो कोई मुख्यमंत्री बुंदेलखण्ड जाकर सुभाषित बोले कि 'नारी मुक्ति का मार्ग सती चौरा से होकर गुजरता है।' आप कुछ कहें, मैं आदर्श नागरिक हूं। जाति व्यवस्था स प्रीति करूंगा, डंके की चोट पर करूंगा। किसी को चोट पहुंचे तो मेरे तथाकथित ठेंगे से। अपने तोगड़िया में पूरी आस्था है। प्रशासनिक अधिकारी उन्हें भाव नहीं देते, ऐसी खबरें हैं। मौलिक चिंतकों की यही दशा होती है। कवियों के बाद भाजपा में चितकों का आगमन राष्ट्रपिता की आत्मा को संतोष देगा।

प्रेम खाला का घर नहीं है, यह कबीर ने बताया है। किसका घर है, इसकी खोज जारी है। मुझे लगता है प्रेम निठल्लों का घर है, निकम्मों का अड्डा है। गालिब ने कहा ही है, 'इश्क ने गालिब निकम्मा कर दिया।' हमें कर्मठ समाज बनाना है। ऐसा समाज, जिसमें प्रेम के लिए कोई स्थान न हो। ऐसे मंदिर उत्तम होते हैं, जिनमें भगवान के स्थान पर दान पात्र की प्राण प्रतिष्ठा हो। एक ज्ञानी का कहना है प्राण जितने कम होते जाते हैं, उतनी प्रतिष्ठा बढ़ती है। बेजान का सम्मान हमारी परंपरा है। परंपरा का अध्ययन करें तो प्रेम न करने के कई कारणों पर रोशनी पड़ती है। औरंगजेब भाइयों से प्रेम करता तो उसे राज्य करने का मौका कैसे मिलता। कुछ लोग भाईचारे से प्रेम करते तो पाकिस्तान का निर्माण कैसे होता। प्रेम निर्माण में बाधा उत्पन्न करता है। गरीबों से प्रेम होगा तो उनके झोपड़े ढहाने में हिचक होगी। हिचक से संशय जन्म लेगा। फिर बिजनेस कांप्लेक्स कैसे बनेंगे। माता-पिता से प्रेम होगा तो उनका बूढ़ापन मन में व्याकुलता जगाएगा। फिर सेवा से समय नष्ट होगा। समय कीमती है। माता-पिता बाजार में मिल जाएंगे, समय नहीं मिलेगा। यह भी संभव है एक जोड़ी मां-बाप लेने पर एक बाप फ्री मिल जाए। समय बचाओ, जीवन बचे न बचे, रिश्ते रहें न रहें। पिछले दिनों दो घटनाएं हुई हैं उनमें 'आगे बढ़ता समाज' जैसा चित्र उभरता है। शिष्य गुरु से प्रेम करता तो गुरुपत्नी को कैसे भगा ले जाता। गुरु शिष्य से प्रेम करता तो नियुक्ति के समय मारुति कार उपहार में कैसे मिलती। प्रगति के लिए प्रीति रहित होना जरूरी है। जिन आंखों में प्रीति का